मत पूछो।

अमरेंद्र कुमार

बहुत कुछ गुजर चुकी है इन दिनों में मुझ पर,
मेरा हर एक पल इन हालातों का मारा है,
अब मुझसे मेरे वह हालात मत पूछो।

बहुत ही भयानक मंजर था उस रात
दिल दहला देने वाला शोर था उस रात की हवाओं में,
अब उन हवाओं में मैंने कैसे गुजारी रात मत पूछो।

वह मुलाकात भी क्या मुलाकात थी,
कहने को तो थे हम दोनों एक दूसरे की बाहों में,
इतना दर्दनाक थै वह मंजर,
और हम दोनों एक-दूसरे के दर्द में इस कदर डूबे थे,
कि दर्द एक को होता तो धड़कने दूसरे की बढ़ जाती थी,
अब कैसी रही हमारी वह मुलाकात मत पूछो।

जज्बात सारे हमारे उस रात,
आंखों से आंसू बनकर बह गए।
अब जो बयां न किये जा सकें,
हमसे हमारे ऐसे जज्बात मत पूछो।

उस रात शायद रोया होगा ये आसमां हमारे दर्द पर,
तभी तो इतनी दर्दनाक थी उस रात की बरसात,
अब हमसे कैसी थी वह बरसात मत पूछो।

जो सुबह कम कर सकें हमारे दर्द को,
उस सुबह के इन्तजार में,
काटा है हमने सदियों की तरह उस रात के एक-एक पल को,
हमसे अब उस सुबह के इन्तजार के लम्हात मत पूछो।

सारे गलत और झूठे से लगने लगे है ख्याल वे,
जो थे उस भगवान के बारे में,
अब जिन पर नहीं रहा खुद मेरा भी विश्वास,
अब मुझसे मेरे ऐसे ख्यालात मत पूछो।

Scanned with OKEN Scanner

मंजर

कुछ ही पलों में इस शहर का यह क्या मंजर हो गया।

जहाँ अभी दौड़ रही थी अपनी रफ्तार से जिंदगी,

हर कोई जिंदगी की इस दौड़ में दौड़ रहा था।

जहाँ अभी हर तरफ लोगों की भीड़ का शोर गूंज रहा था,

अचानक से यह कैसा तूफान आया

और सब कुछ अपने साथ ले गया।

क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ,

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा।

ये करवटें इस धरती की थी

या इस वक्त की हम नहीं जानते,

हम तो बस इतना जानते हैं कि

एक भयावह तूफान आया और

पलक झपकते ही सब कुछ अपने साथ ले गया।

बस पीछे छोड़ गया तो हमारे

अपनों और सपनों का मलवा,

अभी तक जिन घरों में जिंदगी रहा करती थी,

अब उन घरों से मौत का मातम सुनाई दे रहा है।

जिधर देखो उधर एक भयावह दृश्य दिखाई देता है,

हर तरफ मौत का तांडव चल रहा है।

लोगों की भीड़ लाशों के ढेर में बदल गयी,

इन घरों में सिर्फ लोग नहीं उनके सपने भी बसते थे,

इन घरों के साथ कई आंखों के सपने भी चकनाचूर हो गये हैं.

Scanned with OKEN Scanner

न ये घर रहे और न ही अब वो सपने,
जो माँ बाप अपने बच्चों के लिए
और बच्चे अपने भविष्य के लिए देखते थे.
पर कोई भी तूफान जिंदगी की रफ़्तार
को नहीं रोक सकता है,
कल एक नई सुबह के साथ जिंदगी फिर
अपनी रफ्तार से दौड़ेगी.
जिंदगी न कभी रूकी है, और न कभी रूकेगी.

चित्रकार:-मा. अगस्त्य प्रताप सिंह
क्लास-2nd
सागर पब्लिक स्कूल,भोपाल(म प्र)

Scanned with OKEN Scanner